International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in March 2024, ISSN -2393-8048

"नई शिक्षा नीति 2020 में डाइट की भूमिका"

डॉ० सरिता जैन, शोध पर्यवेक्षिका, विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान, उदयपुर (राज.)
नीतू सेन, शोधार्थी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

1 सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में "नई शिक्षा नीति 2020 में डाइट की भूमिका" का उल्लेख किया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 के तहत राजस्थान के सभी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) की भूमिका पहले की अपेक्षा बहुत ज्यादा विस्तृत होगी यह संस्थान केवल भविष्य के लिए अध्यापक ही तैयार नहीं करेंगे, बल्कि विद्यालयी शिक्षा को चुस्त–दुरुस्त व कारगर बनाने हेतु भी निरंतर कार्य करेंगे। नई शिक्षा नीति 2020 के तहत अब डाइट सरकारी स्कूलों के पहली कक्षा से लेकर 12वीं कक्षा तक पढ़ने वाले सभी गरीब परिवारों के बच्चों के भविष्य को बेहतर करने की पूरी कोशिश करेंगे तथा इस कार्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हुए शिक्षा के शत प्रतिशत स्तर को प्राप्त करने के लिए नए–नए नवाचारों को भी अपनाएंगे।[1]

2 प्रस्तावना :

शिक्षा मनुष्य के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित हो सकता है। शिक्षा को शब्द संग्रह अथवा शब्द समूह की स्मृति में न देखकर विभिन्न शक्तियों के विकास के रूप में देखा जाना चाहिए। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता है।[2]

शिक्षा केवल मानव व्यक्तित्व के विकास का माध्यम ही नहीं, सामाजिक संरचना एवं राष्ट्र निर्माण की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सतत् प्रक्रिया भी है। शिक्षा ही व्यक्ति को उसके सामाजिक परिवेश से समायोजित कर उसे एक सामाजिक प्राणी बनाती है। शिक्षा ही उदान्त जीवन मूल्यों एवं आदर्शो का प्रतिपादन कर व्यक्ति को आदर्शोन्मुखी उन्नयन की प्रेरणा देने के सम्प्रेषण का प्रभावशाली माध्यम है।[3] शिक्षा के इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु नई शिक्षा नीति 2020 की अपेक्षा के अनुरूप ही डाइट अपना कार्य कर रही है।

3 डाइट की पृष्ठभूमि :

डाइट की कल्पना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में की गई थी, और 1990 के प्रारम्भ में भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्राथमिक शिक्षा के विकास एवं प्राथमिक शिक्षा को जिला स्तर पर विकेन्द्रीयकित करने के उद्देश्य से डाइट की स्थापना की गई थी। डाइट से संबंधित सर्वप्रथम दिशानिर्देश 1989 में भारत सरकार द्वारा प्रकाशित "पिंक बुक" में दिये गये है।[4]

4 डाइट के कार्य :

- डाइट शिक्षकों के सेवा–पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए जिला स्तरीय शैक्षणिक नोडल संस्थान के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- डाइट में अल्पावधि और दीर्घावधि दोनों के लिए आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण आयोजित किया जाता है।
- डाइट शिक्षकों को व्यावसायिक और नेतृत्व विकास में सहायता प्रदान करती है।
- डाइट एक जिला स्तरीय संस्थान के रूप में यह शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षुओं को क्रियात्मक अनुसंधान करने का अवसर प्रदान करती है।
- डाइट का मुख्य कार्य शिक्षकों को प्रशिक्षित एवं उन्मुख करना तथा उन्हें नवीन शिक्षण पद्धति एवं नवाचारों से अवगत कराना है।
- डाइट शिक्षकों को शैक्षणिक एवं संसाधन सहायता में करती है।
- डाइट शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करती है।
- डाइट पाठयक्रम एवं सामग्री विकास एवं विस्तार गतिविधियाँ में सहायता करती है।
- डाइट स्कूलों की गुणवत्तापूर्ण तथा शिक्षा का मूल्यांकन और निगरानी करती है।
- डाइट विभिन्न हितधारकों के साथ सहयोग करती है।
- डाइट एक संसाधन केन्द्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- सामुदायिक सहभागिता डाइट का एक महत्वपूर्ण कार्य है।[5]

5 नई शिक्षा नीति में डाइट की भूमिका :

भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 29 जुलाई 2020 को शुरु हुई थी जिसमें अध्यापक प्रशिक्षण, अनुसंधान कार्य तथा डी.एल.एड़ के छात्रों को प्रशिक्षित करना आदि कार्यक्रमों को शामिल किया गया

था। ये सभी कार्य डाइट के द्वारा सुचारु रुप से शुरु किए ता रहे है। नई शिक्षा नीति में डाइट की भूमिका को निम्न बिन्दुओं के आधार पर और अधिक समझा जा सकता है –

- नई शिक्षा नीति 2020 में एक 'FLN' नामक एक कार्यक्रम शामिल किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य 3 से 8 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को भाषा और गणित की शिक्षा प्रदान करना है। एफ.एल.एन. मिशन भारत के सभी राज्यों में शुरू किया जा रहा है और इसका लक्ष्य 2025–26 तक छोटे बच्चों के समग्र विकास में मदद करना है। यह मिशन नई शिक्षा नीति की स्किल इंडिया यानी निपुण भारत पहल का हिस्सा है। एफ.एल.एन. भारत सरकार की नई शिक्षा नीति का एक हिस्सा है। इसे निपुण योजना के अंतर्गत लागु किया गया है और इसमें 3 वर्ष से लेकर 9 वर्ष के बच्चों का समग्र विकास करना है।
- एफ.एल.एन. का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बच्चे खेल, कहानियों, तुकबंदी, गतिविधियों, स्थानीय कला, शिल्प और संगीत के माध्यम से आनंदपूर्ण तरीके से सीखें और आजीवन सीखने के लिए मजबूत नींव विकसित करें तथा इसके साथ ही बच्चो को उसके मातृभाषा के साथ साथ स्थानीय भाषा में पढ़ाना है।[6]
- डाइट की प्राथमिक भूमिकाओं में से एक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम डिजाइन और विकसित करना है। ये कार्यक्रम शिक्षकों को अपने छात्रों को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करने के लिए डिजाइन किए गए हैं।
- डाइट नियमित रूप से रिफ्रेशर कोर्स, कार्यशालाएँ और सेमिनार आयोजित करके शिक्षकों को निरंतर सहायता भी प्रदान करते हैं।
- डाइट की एक और महत्वपूर्ण भूमिका अभिनव शिक्षण रणनीतियों को विकसित करना और उन्हें लागू करना है। डाइट छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करने और उन आवश्यकताओं को पूरा करने वाली शिक्षण रणनीतियों को डिजाइन करने के लिए स्कूलों के साथ मिलकर काम करते हैं। वे शिक्षकों के साथ मिलकर पाठ योजनाएँ और गतिविधियाँ विकसित करने के लिए भी काम करते हैं जो आकर्षक और प्रभावी हैं।
- डाइट पाठ्यक्रम विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों के अनुरूप पाठ्यक्रम रूपरेखा विकसित करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (SCERT) के साथ मिलकर काम करते हैं।
- डाइट यह सुनिश्चित करने के लिए स्कूलों के साथ भी काम करते हैं कि पाठ्यक्रम प्रभावी ढंग से लागू हो और छात्रों को अच्छी शिक्षा मिले।
- उपरोक्त भूमिकाओं के अलावा, डाइट का शिक्षक शिक्षा पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। वे शिक्षकों को सेवा–पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए जिम्मेदार हैं। वे शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को नवीनतम शिक्षण पद्धतियों के बारे में मार्गदर्शन भी देते हैं और उन्हें अपना पाठ्यक्रम विकसित करने में मदद करते हैं।

डाइट स्कूलों और सरकार के बीच सेतु का काम भी करते हैं। वे जमीनी स्तर पर शिक्षा नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करने के लिए सरकार के साथ मिलकर काम करते हैं। वे इन नीतियों और कार्यक्रमों की प्रभावशीलता पर सरकार को फीडबैक भी देते हैं।[7]

6 नई शिक्षा नीति में डाइट का महत्व :

- शैक्षिक प्रगति और परिवर्तन को आगे बढ़ाने के लिए डाइट और शिक्षा नीति के बीच तालमेल तथा सम्बंध महत्वपूर्ण है।
- डाइट ही प्राथमिक स्तर की शिक्षा में नीति विकास, कार्यान्वयन और मूल्यांकन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- डाइट शैक्षिक परिदृश्य को सकारात्मक रूप से आकार देने की क्षमता रखता है।
- नीतिगत निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में डाइट को सक्रिय रूप से शामिल करके, प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करके और नीति परिणामों का मूल्यांकन करके, शिक्षा प्रणाली शिक्षार्थियों और शिक्षकों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित हो सकती है।
- इसे प्राप्त करने के लिए, हितधारकों को वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य के अनुरूप नीतियों को विकसित करने के लिए, डाइट पेशेवरों और नीति निर्माताओं की विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए, निकट सहयोग करना चाहिए।

- पर्याप्त फंडिंग, सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को दूर करना और निरंतर व्यावसायिक विकास में निवेश करना डाइट तथा शिक्षा नीति 2020 संबंध को मजबूत करने में महत्वपूर्ण कदम हैं।[8]

निष्कर्ष :

मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण समाज का अभिन्न अंग माना जाता है इसी कारण समाज यह आशा करता है कि प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तिगत व सामाजिक विकास हो। समाज बालक की आवश्यकताओं तथा उनके विचारों व व्यवहारों में परिवर्तन लाता है।[8]

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति 2020 में डाइट की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इमारें देश में एक बालक की शिक्षा का प्रथम, प्रभावी एवं महत्वपूर्ण स्तर प्रारम्भिक शिक्षा (कक्षा 1 से 8 तक) को ही माना गया हैं जिसका सफल संचालन डाइटों के द्वारा ही किया जाता है। अतः डाइट और नई शिक्षा नीति 2020 का निर्बाध एकीकरण शैक्षिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने, नवाचार को बढ़ावा देने और तेजी से बदलती दुनिया में सफलता के लिए भावी पीढ़ियों को तैयार करने के लिए आवश्यक है।[9]

निष्कर्ष रूप में, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान भारत में शिक्षा प्रणाली को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करने और विकसित करने से लेकर नवीन शिक्षण रणनीतियों को लागू करने और पाठ्यक्रम विकसित करने तक, डाइट शिक्षा सुधार में सबसे आगे हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और नवीन कार्यक्रमों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के साथ, डाइट अकादमिक उत्कृष्टता का केंद्र बन गए हैं।[10]

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. www.livehindustan.com
2. श्रीमती शर्मा आर.के. व दुबे श्री कृष्ण, ''शिक्षा के दर्शनशास्त्रीय आधार'', राधा प्रकाशन मंदिर प्रा.लि., आगरा, संस्करण 2007, पृष्ठ संख्या 01
3. डॉ. शर्मा कुमार अशोक, ''प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था'', लिटरेरी सर्किल, संसारचन्द्र रोड़, जयपुर, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ संख्या 01
4. www.scert.cg.gov.in
5. www.dietkamrupmetro.in
6. www.himwantlive.com
7. www.educationforallinindia.com
8. www.educationforallinindia.com
9. डॉ. बैंस नरेन्द्र सिंह, गर्ग ओम प्रकाश, दत्ता संजय, ''उभरते हुए भारतीय समाज में अध्यापक'', साहित्य प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण, पृ.सं. 01
10. www.educationforallinindia.com